International Journal of Sanskrit Research 2018; 4(6): 34-34

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2018; 4(6): 34-34
© 2018 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 12-09-2018
Accepted: 14-10-2018

डॉ. अनीता पाण्डेय
चन्द्रिका प्रसाद शुक्ल महाविद्यालय,
जौरहर गुलहरिया गोरखपुर,
गोरखपुर उत्तर प्रदेश, भारत

Correspondence
डॉ. अनीता पाण्डेय
चन्द्रिका प्रसाद शुक्ल महाविद्यालय,
जौरहर गुलहरिया गोरखपुर,
गोरखपुर उत्तर प्रदेश, भारत

कृष्ण प्रसाद धिमिरे विरचित श्री कृष्ण चरितामृतम् महाकाव्य के नायक

डॉ. अनीता पाण्डेय

प्रस्तावना

श्री कृष्ण चरितामृतम महाकाव्य के चरित्र नायक भगवान श्री कृष्ण है यह बात महाकाव्य के नाम से ही स्पष्ट हो जाता है। इस महाकाव्य में कृष्ण को परात्पर ब्रहम के रूप में चित्रित किया गया है, इसमें कृष्ण के सम्पूर्ण चरित्र का वर्णन न हो कर उनकी बाल लिलाएं ही वर्णित है। बाल लिलाओं में सामान्य शिशु लीला के विपरित कृष्ण की लीलाएँ अदभूत और अतिमावीय है। अत्यन्त अल्प आयु में पूतना शकटासुर, वकासुर, अधासुर जैसे भयंकर और मायावी असुरों के वध की लीलाएँ कृष्ण की अलौकिक शक्ति की परिचायक है। अपने मुख में ही निखिल ब्रहमांड का दर्शन तथा स्वयं को बछड़ों और ग्वाल बालों के रूप में प्रकट कर देने की उनकी लीला सामान्य जनों के लिए अत्यन्त विस्मय कारिणि है।

कृष्ण हलदानी शक्ति और महाभाष स्वरूपा श्री राधा को इस महाकाव्य की नायिका कहा जा सकता है। जो वृषभानु और कृर्ति की पुत्री के रूप में इस महाकाव्य में वर्णित है।

इस महाकाव्य का प्रति नायक कंस है जो भोज वंशी राजा उग्रसेन का पुत्र था वह अत्यन्त मायावी और हल पदम परायण था। उसमें अपने पिता को अपदस्थ करके नजरबन्द करवा दिया था और स्वयं मथुरा का शासक बन बैठा था भविष्यवाणी द्वारा कृष्ण को अपना संहारक समझने के कारण वह कृष्ण से वैर रखता था। और उन्हे मारने के लिए अनेक असुरों को भेजा करता था।

वसुदेव और देवकी उनके जन्मदाता पिता और माता तथा पालनहार नन्द और यशोदा पालन करने के कारण पिता और माता है। अन्य पात्रों में बलराम नारद गर्ग आकद प्रमुख है।

पृथ्वी पर पापियों की संख्या अत्यधिक बढ़ गई थी। जिससे वो ब्राहमण साधु संत लोग पीड़ित होने लगे थे पाप से बोझिल पृथ्वी ने संसार के कल्याणार्थ जाकर भगवान ब्रहम से निवेदन किया कि मै इन पापियों को ढोने में सर्वथा असमर्थ हूँ। अतः कृपा कर आप उनके विनाश के लिए उपाय ढूढँ निकाले जिससे मेरी पीड़ा दूर हो सके।

माता पृथ्वी के इस निवेदन को सुनकर ब्रहम जी ने पृथ्वी की पीड़ा का उल्लेख विश्वरक्षक भगवान नारायण से किया। नारायण ने आश्वासन दिया कि मै शीघ्र ही पृथ्वी पर अवतरित होकर पापियों का विनाश करँगा।